"निष्कपट"

1. माधो हम ऐसे तू ऐसा । हम पापी तुम पाप खंडन - नीको ठाकुर देसा ।

अर्थः- हे प्रभु ! हम जीव ऐसे विकारी हैं, और तू ऐसा उपकारी है । हम पाप कमाने वाले हैं, तू हमारे पापों का नाश करने वाला है । हे ठाकुर ! तेरा देश सुंदर है (वह देश-साधु-संगत सोहणा है जहाँ तु बसता है) ।

हम मैले तुम ऊजल करते - हम निरगुन तू दाता । हम मूरख तुम चतुर सिआणे - तू सरब कला का गिआता ।

अर्थः- हे प्रभु ! हम जीव विकारों की मैल से भरे रहते हैं, तू हमें पवित्र करने वाला है । हम गुण-हीन हैं, तू हमें गुण बख्शने वाला है । हम जीव मूर्ख हैं, तू दाना है, तू समझदार है तू (हमें अच्छा बना सकने वाले) सारे हुनर जानने वाला है ।

तुम सभ साजे साज निवाजे - जीउ पिंडु दे प्राना । निरगुनीआरे गुन नही कोई - तुम दान देहु मिहरवाना ।

अर्थः- हे प्रभु ! तूने जिंद शरीर प्राण दे के सारे जीवों को पैदा किया है, पैदा करके सब पर बख्शिश करता है । हे मेहरवान ! हम गुण-हीन हैं, हममें कोई गुण नहीं हैं । तू हमें गुणों की दाति बख्शता है ।

तुम करहु भला हम भलो न जानह - तुम सदा-सदा दइआला । तुम सुखदाई पुरख बिधाते - तुम राखहु अपुने बाला ।

अर्थः- हे प्रभु ! तू हमारे लिए भलाई करता है, पर हम तेरी की हुई भलाई की कद्र नहीं जानते । फिर भी तू हम पर सदा दयावान रहता है । हे सर्व-व्यापक विधाता ! तू हमें सुख देने वाला है, तू (हमारी) अपने बच्चों की रखवाली करता है ।

तुम निधान अटल सुलितान - जीअ जंत सभ जाचै । कहु नानक हम इहै हवाला - राखु संतन के पाछै । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 613)

अर्थः- हे प्रभु जी ! तुम सारे गुणों के खजाने हो । तुम सदा कायम रहने वाले बादशाह हो । सारे जीव (तेरे दर से) माँगते हैं । हे नानक ! कह: (हे प्रभु!) हम जीवों का तो यही हाल है । तू हमें संत-जनों के आसरे में रख ।

a. दात पिआरी विसरिआ दातारा । जाणे नाही मरण विचारा ।

अर्थः- माया-ग्रसित मूर्ख मनुष्य दातार प्रभु को भुलाए रखता है, उसकी दी हुई दाति इसको प्यारी नहीं लगती है । मोह में बेबस हुआ जीव अपनी मौत को याद नहीं करता ।

b. जैसा बीजे सो लुणै - करम इहु खेत । अकिरतघणा हरि विसरिआ - जोनी भरमेत । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 706)

अर्थः- ये शरीर (किए) कर्मों की (जैसे) खेती है (इसमें) जैसा (कर्म रूपी बीज कोई) बीजता है है वही काटता है । जो मनुष्य (प्रभु के) किए (उपकारों) को भुलाते हैं वे उसको बिसार देते हैं (आखिर) जूनियों में भटकते हैं ।

2. कंचन नारी मह जीउ लुभत है - मोह मीठा माइआ । घर मंदर घोड़े खुसी - मन अन रस लाइआ । हरि प्रभ चित न आवई - किउ छूटा मेरे हरि राइआ ।

अर्थः- मेरी जीवात्मा सोने के मोह में, स्त्री के मोह में फसी हुई है । माया का मोह मुझे मीठा लग रहा है । घर, पक्के महल घोड़े (देख-देख के) मुझे चाव चढ़ता है, मेरा मन और-और पदार्थों के रस में लगा हुआ

है । हे मेरे हरि ! हे मेरे राजन ! (तू) परमात्मा कभी मेरे चित्त में नहीं आता । मैं (इस मोह में से) कैसे निकलूँ ?

मेरे राम - इह नीच करम हरि मेरे । गुणवंता हरि-हरि दइआल कर किरपा - बखस अवगण सभ मेरे ।

अर्थः- हे मेरे राम ! मेरे हरि ! मेरे ये नीच कर्म हैं । पर तू गुणों का मालिक है । तू दया का घर है । मेहर कर और मेरे सारे अवगुण बख्श।

किछ रूप नही किछ जात नाही - किछ ढंग न मेरा । किआ मुह लै बोलह गुण बिहून - नाम जपिआ न तेरा । हम पापी संग गुर उबरे - पुंन सतिगुर केरा ।

अर्थः- ना मेरा (सुंदर) रूप है, ना मेरी ऊँची जाति है, ना मेरे में कोई निपुणता है । हे प्रभु ! मैं गुणों से विहीन हूँ । मैंने तेरा नाम नहीं जपा । मैं कौन सा मुंह ले कर (तेरे सामने) बात करने के लायक हूँ ? ये सत्गुरू की मेहर हुई है कि मैं पापी, गुरु की संगति में रह के (पापों से) बच गया हूँ ।

सभु जीउ पिंड मुख नक दीआ - वरतण कउ पाणी । अंन खाणा कपड़ पैनण दीआ - रस अन भोगाणी । जिन दीए सु चित न आवई - पसू हउ कर जाणी ।

अर्थः- ये जीवात्मा, ये शरीर, ये मुंह ये नाक आदि अंग ये सब कुछ परमात्मा ने मुझे दिया है । पानी (हवा, अग्नि आदि) मुझे उसने बरतने के लिए दिए हैं । उसने मुझे अन्न खाने को दिया है, कपड़ा पहनने

को दिया है, और अनेक स्वादिष्ट पदार्थ भोगने को दिए हैं । पर, जिस परमात्मा ने ये सारे पदार्थ दिए हैं, वह मुझे कभी याद भी नहीं आता । मैं (मूर्ख) पशु अपने आप को बड़ा समझता हूँ ।

सभ कीता तेरा वरतदा - तूं अंतरजामी । हम जंत विचारे किआ करह - सभ खेल तुम सुआमी । जन नानक हाट विहाझिआ - हरि गुलम गुलामी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 167)

अर्थः- हे प्रभु! हम जीवों के वश में भी क्या है ? जगत में जो कुछ हो रहा है सब तेरा ही किया हो रहा है, तू हरेक दिल की जानता है । हम तुच्छ जीव (तुझसे बागी हो के) क्या कर सकते हैं ? हे स्वामी ! ये सारा तेरा ही खेल हो रहा है । (जैसे कोई गुलाम मण्डी से खरीदा जाता है तैसे ही) ये तेरा दास नानक (तेरी साधु-संगत की दुकान में) (तेरे सुंदर नाम से) बिका हुआ है । तेरे गुलामों का गुलाम है ।

३. तोसो न नाथ अनाथ न मोसर - तोसो न दानी न मो सो भिखारी ।

अर्थः- हे सच्चे गुरु ! आपके समान कोई मालिक नहीं है । लेकिन मुझ जैसा कोई आश्रित भी नहीं है । आपके समान कोई महान दानी नहीं है और मुझ जैसा कोई ज़रूरतमंद भीख मांगने वाला नहीं है ।

मोसो न दीन दइआल न तोसर - मोसो अगिआन न तोसो बिचारी ।

अर्थः- कोई भी मेरे जितना दुखी नहीं है, लेकिन कोई भी आपके जितना दयालु नहीं है । कोई भी मेरे जितना अज्ञानी नहीं है, लेकिन कोई भी आपके जितना ज्ञानी नहीं है ।

मोसो न पतत न पावन तोसर - मोसो बिकारी न तोसो उपकारी ।

अर्थः- मेरे जितना कोई भी कर्म और कर्मों में इतना गिरा हुआ नहीं है । लेकिन तुम्हारे जितना पवित्र करने वाला कोई और नहीं है । मेरे जितना पापी कोई नहीं है और तुम्हारे जितना पुण्य करने वाला भी कोई नहीं है ।

मेरे है अवगुन तू गुन सागर - जात रसातल ओट तिहारी ।
(कबित सवैये भाई गुरदास जी - कबित 528)

अर्थः- मैं दोषों और दुर्गुणों से भरा हुआ हूँ, परन्तु आप गुणों के सागर हैं । नरक के मार्ग में आप ही मेरी शरण हैं ।

a. तुम चंदन हम इरंड बापुरे - संग तुमारे बासा । नीच रूख ते ऊच भए है - गंध सुगंध निवासा । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 486)

अर्थः- हे माधो ! तू चंदन का पौधा है, मैं निमाणा सा हरिण्ड हूँ (पर तेरी मेहर से) मुझे तेरे (चरणों) में रहने के लिए जगह मिल गई है, तेरी सुंदर मीठी वासना मेरे अंदर बस गई है, अब मैं नीचे पौधे से ऊँचा बन गया हूँ ।

b. कबीर मन जाने सभ बात - जानत ही अउगन करे । काहे की कुसलात - हाथ दीप कूए परे । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1376)

अर्थः- हे कबीर ! (जो मनुष्य हर रोज़ धर्म-स्थान पर जा के भजन भक्ति करने के बाद सारा दिन ठगी-फरेब की मेहनत-कमाई करता है, वह इस बात से नावाकिफ नहीं कि ये बुरी बात है, उसका) मन सब कुछ जानता है, पर वह जानता हुआ भी (ठगी की कमाई वाला) पाप करता जाता है । (परमात्मा की भक्ति तो एक जलता हुआ दीपक है जिसने जिंदगी के अंधेरे भरे सफर में मनुष्य को रास्ता दिखाना है, विकारों के कूएँ में गिरने से बचाना है, पर) उस दीए का क्या सुख अगर उस दीए के हमारे हाथ में होते हुए भी हम कूँएं में गिर जाए ?

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"